Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in; Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol.6, Issue-III, January 2021

राष्ट्र निर्माण : सत्ता पक्ष और विपक्ष का योगदान

(Nation Building: Contribution of the ruling party and the opposition)

***Kuldeep**
Ph.D. Scholar (Political Science),
Government P. G. College Jhalawar, University of Kota, Rajasthan, India
Email: kssheoran.sheoran@gmail.com
Orcid: https://orcid.org/0000-0002-2535-2550
DOI: https://doi.org/10.53724/jmsg/v6n3.07

****Vijay Pratap Singh**
Ph.D. Superwiser (Political Science),
Government P. G. College Jhalawar,
University of Kota, Rajasthan, India
Email: vijaysinghpols@gmail.com
Orcid: https://orcid.org/0000-0002-9044-1138

संक्षिप्त रूपः

राष्ट्र निर्माण का सीधा और स्पष्ट अर्थ है राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय जागृति। राष्ट्र के सभी लोगों में जन चेतना और जन जागृति लाना ही राष्ट्र निर्माण है। विभिन्न प्रकार के धर्मों, जाति, भाषा, लिंग, निवास स्थान आदि सभी का भेदभाव किए बिना एकता की स्थापना करना राष्ट्र निर्माण है। राष्ट्र निर्माण भ्रष्टाचार से मुक्ति, शोषण व अन्याय से मुक्ति, भाई भतीजावाद से मुक्ति, बेरोजगारी को कम करना, स्वतन्त्रता व समानता और आर्थिक व सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना करने का नाम है। राष्ट्र निर्माण हर नागरिक का राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव है। राष्ट्र निर्माण हर नागरिक की सुरक्षा और अवसर प्राप्ति की सुविधा का नाम है। राष्ट्र निर्माण सभी को स्वतंत्र रूप से कार्य करने और स्वतंत्र रूप से जीवन जीने का नाम है। राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेम, भाईचारा, दया, परोपकार और सहयोग की भावना की आवश्यकता है। भारत को शक्तिषाली राष्ट्र बनाने में युवा वर्ग की भूमिका की आवश्यकता हो सकती है क्योंकि भारत में कुल जनसंख्या का 65 प्रतिशत युवा वर्ग जो विश्व में सर्वाधिक है। युवा अपने कौशल, तकनीकि, समर्पण, त्याग और समन्वय की भावना से कार्य करें और अपनी जिम्मेदारी को समझे तो भारत एक बार फिर से विश्व गुरू बन सकता है।

शब्द कुंजी – राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सुरक्षा, सतापक्ष, सता प्रतिपक्ष, लोकतन्त्र।

परिचयः

विश्व में आज अमेरिका जैसी महाशक्ति भी राष्ट्रवाद जैसे महत्वपूर्ण विचार की ओर बढ़ रही है। यदि हम ट्रम्प के शासन काल का अध्ययन करते हैं तो स्पष्ट रूप से अंदाजा लगाया जा सकता है कि राष्ट्रवाद वर्तमान विश्व में भी कितना प्रासंगिक है। अमेरिका में जो ''अमेरिका फर्स्ट'' की नीति है वह भी इसी का अंग है।

राष्ट्र निर्माण में अनेक देश प्रयासरत हैं। विदेश नीति का भी सार्वभौमिक सिद्धान्त होता है। ''राष्ट्रीय हितों की आपूर्ती करना और उनके साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं करना।'' वैसे तो राष्ट्र निर्माण शब्द को किसी सीमित शब्दों में परिभाषित नहीं किया जा सकता। यह अत्यधिक व्यापक होता है। राष्ट्रीयता का अर्थ विभिन्न, भाषा संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान, धर्म, जाति, लिंग, भाषा आदि का बिना किसी भेदभाव के एकजुट होता है।

भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र है जिसने समय–समय पर विभिन्न प्रकार की बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए एकता का परिचय दिया है। भारत विष्व का जनसंख्या के हिसाब से दूसरा बड़ा देश है। यहां बहुभाषी और बहुसंस्कृति होने के बाद भी कभी अपनी अखंडता पर आंच नहीं आने दी है।

भारत को शक्तिशाली राष्ट्र बनाने के लिए आज वही चुनौतियों जैसे विभाजनकारी आन्दोलन बेरोजगारी, भ्रष्ट्राचार , कमजोर पिछड़े दलित वर्गों का उत्थान, कमजोर होती अर्थव्यवस्था, अल्पसंख्यकों का कल्याण आदि से निपटना होगा। बढ़ते असन्तुष्ट वर्ग को रोकना और उसे सन्तुष्ट करने का प्रयास करना होगा।

भारत में केन्द्र और राज्यों में समान रूप से संसदीय लोकतंत्र को अपनाना गया है। संसदीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी विशेषता कार्यपालिका का व्यवस्थामिका के प्रति सामुहिक उत्तरदायित्व होता है। लोकतंत्र में सताधारी दल के साथ ही शक्तिशाली विपक्ष का होना भी आवश्यक होता है। विपक्ष की सक्रीयता से ही जनता की दबी हुई मांग और सता द्वारा किये जा रहे जन विरोधी कार्य उठाये जाते हैं। सत्तापक्ष पर नियंत्रण और दबाव से राष्ट्रहितेषी और जनहितेषी कार्य करवाये जा सकते हैं। सत्तापक्ष के साथ विपक्ष की सक्रीयता ही लोकतंत्र की खुबसुरती है।

अध्ययन की विधि

सम्बन्धित विषय का अध्ययन एतिहासिक अनुभवमूलक और तुलनात्मक अध्ययन पद्धति को अपनाया गया है। इसके लिए द्वितियक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिसमें पत्र पत्रिकायें, लेख, डायरी और विभिन्न प्रकार की पुस्तकों व टी.व्ही. डिबेट का सहारा लिया गया है।

उद्देश्य

1. राष्ट्र निर्माण के सम्बन्ध में जानना।
2. राष्ट्र निर्माण के समक्ष चुनौतियों को दूर करने के उपाय का अध्ययन करना।
3. राष्ट्र निर्माण में सत्तापक्ष और विपक्ष की भूमिका का अध्ययन करना।
4. स्वच्छ और सुदृढ़ लोकतंत्र के लिए सत्तापक्ष और विपक्ष की भूमिका का अध्ययन।
5. विपक्ष की स्थिति का अध्ययन करना और कमजोरियों को दूर करने के उपाय जानना।

अम्बेडकर का राष्ट्रवाद

राष्ट्र निर्माण में बाबा साहेब अम्बेडकर का महत्वपूर्ण योगदान था। अम्बेडकर के राष्ट्रवाद में मानवतावाद के लक्षण निहित हैं। अम्बेडकर एक अखण्ड और न्यायप्रिय राष्ट्र निर्माण में विश्वास रखते थे। अम्बेडकर ने भारत को एक ऐसा राष्ट्र बनाने की कल्पना की जिसमें धर्म, जाति, लिंग, भाषा, वंश आदि किसी का भेदभाव न किया जाये, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना की जावे।

अम्बेडकर ने गरीब, कमजोर, दलित, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों को समाज में न्यायसम्मत स्थान प्राप्त हो। योग्यता को महत्व मिले। असमानता, अन्याय, अस्पृश्यता, भ्रष्ट्राचार, भाई–भतीजावाद, बेरोजगारी, गरीबी आदि सभी से मुक्त शक्तिशाली भारत के निर्माण के समर्थक थे। संविधान के निर्माता, शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण के समर्थक, न्यायप्रिय मानवतावाद के मसीहा, बाबा साहेब अम्बेडकर ने अपना सारा जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया।

एम. एन. श्रीनिवास ने अपनी पुस्तक ''आधुनिक भारत में जातिवाद में लिखा है'' भारत एक नई कल्पना है और इस कल्पना के सत्य रूप होने में कुछ समय लगेगा। विभाजनकारी प्रवृतियां आज भी अस्तित्व में हैं और भविष्य में कई वर्षों तक बनी रहेंगी।''[1]

शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण में बाधायें/चुनौतियोंः

- बेरोजगारी, मंहगाई, गरीबी, शोषण और अन्याय नक्सलवाद, माओवाद, आतंकवाद।
- विभिन्न प्रकार के आन्दोलनकारी संगठनों की उग्रता क्षेत्रीयवाद।
- साम्प्रदायिकता।
- भाषा की समस्या।
- अल्पसंख्यकों की समस्या।
- राजनीतिक दलों का गैर जिम्मेदारी रवैया, अवसरवादिता।
- कमजोर और पिछड़ा विपक्ष/विपक्ष का अभाव।
- केन्द व राज्य सरकारों का मनमाना रवैया।

अनेकता में एकता भारत का विशिष्ट गुण रहा है। संविधान निर्माताओं द्वारा भारत के इस गुण को बनाए रखने का सराहनीय प्रयास किया गया लेकिन आज भारत में राष्ट्रीय एकता अर्थात् शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण में समक्ष अनेक चुनोतियां दिखायी दे रही हैं। इन चुनौतियों से समय पर निपटना आवश्यक है अन्यथा ये समस्यायें बड़ा खतरा बन सकती हैं। इस सन्दर्भ में रजनी कोठारी का कथन सही कहा जा सकता है, ''भारत में राजनीतिक विकास की मूल समस्या एकीकरण की है अर्थात् नये राजनीतिक केन्द्र बिन्दु की स्थापना और दृढ़ीकरण, उनका बहुमुखी विस्तार, विभिन्न समस्याओं का पल्लवन विविधता को एक सूत्र में संग्रहण कर एक राष्ट्र का निर्माण अर्थात् एकीकरण की क्षमता का विकास यही समस्या हमारे राष्ट्र निर्माताओं में सामने सबसे बड़ी समस्या रही है।''[2]

राष्ट्र निर्माण में सतापक्ष और विपक्ष का योगदान

भारत में लोकतंत्र का संसदीय मॉडल अपनाया गया है। लोकतंत्र की खूबसूरती पक्ष और विपक्ष दोनों की सक्रीय भुमिका से होती है। भारत की संसदीय व्यवस्था में विपक्ष की भुमिका ज्यादा सराहनीय नहीं रही है। स्वतंत्रता के बाद 1967 तक केन्द्र में कांग्रेस शक्तिशाली रूप से सता पर काबिज रहा और विपक्ष बिखरा हुआ कमजोर और दयनीय रहा।

इस समय में सतापक्ष के सामने अर्थव्यवस्था को सुधारक की सबसे बड़ी चुनौति थी। इसी समय विश्व में प्रथम शीत युद्ध चल रहा था। सतापक्ष के सामने उदारवाद व समाजवाद में से किसी एक का चयन करना भी बड़ी चुनौति से कम नहीं था। नेहरू जी ने बीच का रास्ता अपनाते हुए लोकतांत्रिक समाजवाद का चयन किया। शीत युद्ध के बादल भारत के सिर पर मंडरा रहे थे। भारत में ऐसे समय गुटनिरपेक्षता जैसा निर्णय लेकर दोनों महाशक्तियों के बीच टकराहट को कम करने का कार्य किया । 1962 में चीन के साथ, 1965 में पाकिस्तान के साथ

[1] एम. एन. श्रीनिवासः आधुतिक भारत में जातिवाद, पृ. स. 13।
[2] रजनी कोठारीः भारत में राजनीति, पृ. स. 201।

भारत को युद्ध का सामना करना पड़ा। इसी समय भारत के सामने राज्यों के गठन की भी बड़ी चुनौति रही। कृषि सुधार, औधेागिक सुधार के साथ–साथ शिक्षा, चिकित्सा, भरण पेाषण आदि सभी के लिए बड़ी योजनाओं का निर्माण भी बड़ी चुनौति से कम नहीं था। इस समय भारत में विपक्ष का अभाव रहा।

1967 के बाद कई राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारों का निर्माण हुआ। केन्द्र में अब भी कांग्रेस के अलावा कोई बड़ा विकल्प जनता के सामने नहीं था। राज्यों में गैर कांग्रेसी सरकारें बनने के कारण केन्द्र की सरकार राज्यों के मामलों में अनावश्यक हस्तक्षेप करने लगी जिससे केन्द्र राज्य सम्बन्धों में टकराव होना प्रारम्भ हो गया।

1971 में बांग्लादेश के प्रश्न पर पाकिस्तान के साथ युद्ध, 1975 में आन्तरिक अशान्ति के नाम पर राष्ट्रीय आपातकाल ने राष्ट्र निर्माण में बाधा का कार्य किया।

1977 में पहली बार भारत में गैर कांग्रेस सरकार का निर्माण मोरार जी देसाई के नेतृत्व में हुआ। इसी के साथ विपक्ष का भी उद्भव हुआ माना जा सकता है। जनता पार्टी की सरकार भी संगठीत विपक्ष का ही परिणाम थी। जनता पार्टी की सरकार के समय कांग्रेस ने विपक्ष की भुमिका अदा की। लेकिन सतापक्ष में एकता के अभाव में यह सरकार पूरे पांच वर्ष कार्यकाल नहीं कर सकी।

1980 में भारतीय जनता पार्टी का उद्भव हुआ और कुछ समय बाद ही देश को भाजपा जैसा शक्तिशाली विपक्ष मिला। 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या सिख दंगे, 1991 में पी. वी. नरसिंम्हा राव के नेतृत्व में कांग्रेस सतारूढ़ हुई। इस समय तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अनेक बदलाव हो चुके थे। शीत युद्ध समाप्ति के साथ ही भारत ने उदारवाद को अपनाया। दिसम्बर 1992 में कुछ हिन्दु संगठनों ने बाबरी मस्जिद को धवस्त कर दिया। हिन्दु – मुस्लिम विवाद, अन्य पिछड़ा वर्ग को आरक्षण का विवाद, तमिल समस्या (लिट्टे), अनु. 370 की समस्या, जम्मू कश्मीर में आतंकवाद की समस्या आदि बड़ी चुनोतियां सामने थी। इस समय विपक्ष में अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, सुषमा स्वराज, अरूण जेटली जैसे दिग्गज नेता थे। वहीं सतापक्ष की भुमिका इस समय कमजोर हो चूकी थी।

1996 से 1999 तक का काल भारत की संसदीय व्यवस्था का अस्थिरता का काल कहा जा सकता है। तीन वर्ष में तीन लोकसभा के चुनाव हुए। 1999 में कारगिल संघर्ष, 2001 में संसद पर हमला, 2002 में गोधरा कांड आदि ने राष्ट्र निर्माण को कमजोर करने का कार्य किया। 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनी कांग्रेस ने विपक्ष की भूमिका अदा की।

2004, 2009 में यूपीए की सरकार कांग्रेस के नेतृत्व में बनी इस दौरान मनमोहन सिंह भारत के प्रधानमंत्री बने। भारतीय जनता पार्टी ने शक्तिशाली विपक्ष की भूमिका अदा की। 2008 में आतंकवादी हमला, 2009 में सी.आर. पी.एफ. काफिले पर नक्सलवादी हमले ने राष्ट्र निर्माण को बड़ा झटका देने का कार्य किया। आये दिन घोटाले, भ्रष्टाचार, भाई भतिजावाद, मंहगाई, बेरोजगारी और अन्याय में भारत को अत्यधिक कमजोर करने का कार्य किया। इस समय विपक्ष की भूमिका सराहनीय रही। विपक्ष ने भ्रष्ट सरकार के काले करनामें जनता के सामने रखे और सरकार को दबाव में रखा। 2014 तक भारत की स्थिति अन्तराष्ट्रीय पटल पर अत्यधिक कमजोर रही।

2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में एन.डी.ए. को जनता ने भारी बहुमत से समर्थन दिया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनी। एनडीए की सरकार ने

शक्तिशाली राष्ट्रवाद के लिए अनेक सराहनीय प्रयास किये हैं। इनमें मेड इन इंडिया, मेक इन इंडिया, कौशल विकास, आत्मनिर्भर भारत, चीनी एप पर प्रतिबंध, धारा 370 को हटाना आदि महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं। इसके अलावा पाकिस्तान व चीन को उन्ही की भाषा में जवाब देना, सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक, आदि से पाकिस्तान को सबक सिखाना, लद्दाख के प्रश्न पर चीन को मुहतोड़ जवाब देना आदि कार्य यह दर्शाते हैं कि भारत अपनी एकता और अखण्डता के मामले में कोई समझौता नहीं कर सकता। वर्तमान सता का नेतृत्व शक्तिशाली और अखण्ड राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

तत्कालीन सरकार का कुशल नेतृत्व भारत को एक नई उंचाई पर ले जाने में जरूर सक्षम और प्रयासरत है लेकित आज भी राष्ट्र निर्माण के सामने अनेक चुनौतियां मुंह बायें खड़ी हैं। असन्तुष्ट वर्ग लगातार बढ़ रहा है। किसान आन्दोलन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। पट्रोल डिजल के दामेां में लगातार वृद्धि, बेरोजगारी की समस्या, 370 हटने के बाद जम्मू कश्मीर में शान्ति बहाली, आतंकवाद, राज्यों द्वारा केन्द्र के कानूनों का विरोध करना, एन.डी. ए. के घटक दलों द्वारा लगातार बगावत, एनआरसी के प्रश्न पर अल्पसंख्यकों के मन में डर आदि बड़ी समस्यायें शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण में बाधा हैं जो तत्कालीन सरकार के सामने बड़ी चुनौति से कम नहीं है। इसके अलावा अर्थव्यवस्था का प्रश्न, चुनाव आयोग पर विपक्ष का अविश्वास, ई.वी.एम. पर विपक्ष द्वारा आरोप प्रत्यारोप लगाना आदि कार्य ऐसे हैं जो राष्ट्रीय एकता के मार्ग में बाधा का ही कार्य करते हैं।

साथ ही 2014 के बाद यदि विपक्ष की स्थिति का अध्ययन करने पर कहा जा सकता है कि 70 वर्ष के इतिहास में देश में सबसे कमजोर, नेतृत्व विहिन, बिखरा हुआ, तर्कहिन विपक्ष है। भारत की सबसे पुरानी और सबसे बड़ी कांग्रेस पार्टी को लोकसभा चूनाव 2014 में 44 और 2019 में 52 सीटें प्राप्त हुई। जो विपक्ष के लिए 1/10 सीटों से कम रही है। कांग्रेस पार्टी में एक परिवार के नेतृत्व को पार्टी के सीनियर नेताओं द्वारा अस्वीकार किया जाने लगा। लगातार कद्दावर नेताओं द्वारा बगावत की जा रही है। कांग्रेस पार्टी की कोई स्थिर विचारधारा न होना, राष्ट्रीय मुद्दों पर विपक्ष की राष्ट्र विरोधी भावना जैसे सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक के सबूत मांगना ही चाहे अनुच्छेद 370 हटाने का विरोध, पाकिस्तान व चीन समर्थित भाषा बोलना, एन.आर.सी. का विरोध, जनभावनाओं से जुड़े राष्ट्रीय मुद्दों का पार्टी द्वारा विरोध किया जाना, राष्ट्र निर्माण के लिए घातक कहा जा सकता है। विपक्ष द्वारा सरकार को घेरने के असफल प्रयास अर्थात विपक्ष की सारहिन और कमजोर भुमिका, अल्पसंख्यकों को भड़काने की नीति, मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति आदि कार्य राष्ट्रवाद के लिए उचित नहीं कहे जा सकते।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि राष्ट्र निर्माण में सतापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सतापक्ष को चाहिए की राष्ट्रीय हित से जुड़े मुद्दों पर शक्तिशाली रूप से कार्य करे और साथ ही विपक्ष की आवाज सुनते हुए उसका भी समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करे। प्रतिपक्ष को चाहिए कि राष्ट्रीय मुद्दों पर सतापक्ष द्वारा लिए जा रहे बड़े निर्णय जो राष्ट्रीय हित में हों उनका विरोध न करते हुए सतापक्ष का समर्थन करे।

विपक्ष में सुधार की आवश्यकताः

2014 के बाद देश को लगातार कमजोर विपक्ष का सामना करना पड़ रहा है। वर्तमान में कांग्रेस के नेतृत्व में यूपीए विपक्ष की भूमिका में है। यूपीए में कुशल और शक्तिशाली नेतृत्व का अभाव है जो लगातार और सक्रीय होकर विपक्ष की भूमिका अदा कर सके। वर्तमान में यूपीए की अध्यक्षता कांग्रेस की नेता सोनिया गांधी कर रही है।

यूपीए के सभी घटक दल समय समय पर इसका विरोध करते रहे हैं। कांग्रेस के अलावा यूपीए के घटक दलों में अनेक कद्दावर नेता हैं, जैसे शरद पंवार, ममता बेनर्जी, अरविन्द केजरीवाल, देवगोड़ा, स्टालिन अखिलेष यादव, तेजस्वी यादव, असदुदीन औवेसी, मायावती आदि बड़े नेता हैं। जिनको यूपीए में सम्मानजनक भूमिका नहीं मिल रही है। यूपीए के घटक दलों में बड़ी समस्या एकता का अभाव भी रही है। कोई भी नेता एक दूसने दल के नेताओं पर विश्वास नहीं कर रहे और अपने को प्रधानमंत्री से कम नहीं समझ रहे हैं। त्याग और समर्पण का अभाव भी बिखराव का बड़ा कारण रहा है। पार्टी स्वयं में भी एक परिवार का लगातार विरोध हो रहा है। भुपेन्द्र हुड्डा, सचिन पायलेट, कुलदीप बिश्नोई, शशी थरूर, कपिल सिब्बल, गुलाम नबी आजाद, मिलिंद देवड़ा, आनंद शर्मा, नवजोत सिंह सिद्धु, सिद्धारमैया आदि बड़े नेताओं को पार्टी में उचित स्थान न मिलना भी विपक्ष की भूमिका को कमजोर करता है। सतापक्ष को घेरने की या बड़े आन्दोलन के समय पार्टी के एक बडे नेता का बार बार विदेश जाना विपक्ष की स्थिति को कमजोर करता है।

साथ ही कांग्रेस को चाहिए कि वह भारतीय जनता पार्टी की भांति पार्टी के योग्य और कद्दावर नेता को मिडिया डिबेट के लिए भेजे जैसा कि ''भारतीय जनता पार्टी निर्मला सीतारपण, हरदीप पूरी, पीयुष गोयल शाहनवाज हुसैन आदि नेता टी.व्ही. चेनलों में बेालते ही नहीं, बहस में भाग लेते भी दिखाई देते हैं। दूसरी और कांग्रेस के कद्दावर और योग्य नेता शशी थरूर, प्रियंका गांधी, मिलिंद देवड़ा, सचिन पायलेट, सलमान खुर्शीद, आदि प्रमुख नेता टी.व्ही. चेनलों पर कभी नजर नहीं आते।''[3] और अयोग्य व कम अनुभव वाले नेता को जनता सुनना कम पसन्द करती है। सतारूढ़ भारतीय जनता पार्टी की बड़ी विशेषता साल के सभी 365 दिन 24 घंटे बिना छुट्टी लिए काम करते रहना है, वहीं कांग्रेस के प्रमुख नेता का बीच रास्ते में पार्टी को छोड़कर हर रोज विदेश भाग जाना विपक्ष को निरूत्साहित करता है। इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2014 से 2020 तक कांग्रेस के एक बडे नेता जो 250 से ज्यादा बार विदेश यात्राओं पर गये हैं। यह स्वयं पार्टी नेताओं को भी पसंद नहीं रहा है। इसी कारण कांग्रेस में एक परिवार के नेतृत्व का विरोध होने लगा है। विपक्ष को चाहिए की वह क्रमबद्ध और योजनाबद्ध रूप से कार्य करे। शक्तिशाली विपक्ष के अभाव में स्वस्थ और सुदृढ़ लोकतंत्र का निर्माण नहीं हो सकता।

निष्कर्षः

भारत विभिन्नता में एकता वाला देश है। यहां विभिन्न प्रकार की जाति, धर्म, भाषा, रहन–सहन, खान–पान के लोग होने के बाद भी भारत की एकता पर किसी प्रकार का आंच नहीं आया है। भारत की एकता के समक्ष अनेक चुनौतियां समय समय पर सामने आयी हैं। जिनका समाधान तत्कालीन सरकार ने अपने तौर तरीके से निकालने का प्रयास भी किया है। प. जवाहर लाल नेहरू से लेकर वर्तमान की नरेन्द्र मोदी सरकार तक के सामने अनेक समस्यायें राष्ट्र के समक्ष चुनौति बनकर उभरी हैं। राष्ट्र तीन बड़े युद्धों का सामना भी करना पड़ा है जो कि 1962 में चीन के साथ, 1965 और 1971 में पाकिस्तान के साथ और 1999 में पाकिस्तान के साथ कारगिल संघर्ष भी हुआ है। जिसका सामना भारत ने एकता के साथ ताकतवर रूप से किया है।

[3] दैनिक भास्करः रशीद किदवई दकरती कांग्रेस, कवर स्टोरी, 3 जनवरी 2021, पृ.सं. 12।

वर्तमान में 2014 के बाद से लगातार भारत का नेतृत्व शक्तिशाली और लोकप्रिय नेता के हाथों में है। वर्तमान सरकार द्वारा शक्तिशाली राष्ट्र निर्माण के हित में कई अनसुलझे बड़े कदम उठाने का कार्य किया गया है। जैसे अनुच्छेद 370 को हटाकर जम्मु कश्मीर का पूर्ण विलय, आतंकवाद की समाप्ति के बड़े स्तर पर प्रयास, सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक कर पाकिस्तान को जवाब देना, लद्दाख के प्रश्न पर चीन को मुंहतोड़ जवाब देना, चीनी एप्स पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाना, आत्म निर्भर भारत, मेड इन इंडिया, मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत का निर्माण आदि अनेक प्रयास सराहनीय कहे जा सकते हैं। फिर भी वर्तमान सरकार के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं जो राष्ट्र निर्माण में बाधा बनी हैं। जैसे किसानों, मजदूरों, बेरोजगारों को सन्तुष्ट करने का प्रयास, आर्थिक व्यवस्था में सुधार के प्रयास, शिक्षा में गुणवता लाने का प्रयास, समान नागरिक संहिता आदि अनेक प्रयास करने होगें।

2014 के बाद विपक्ष की स्थिति भी अत्यधिक कमजोर हुई है। विपक्ष कमजोर अर्थहीन तर्कहीन और विरोधाभाषी होता रहा है। विपक्षी दलों में आपसी एकता का अभाव और बिखराव की समस्या बढ़ती जा रही है। विपक्ष के पास सर्वे सर्वा और शक्तिशाली नेतृत्व का अभाव भी दिखाई देता है। विपक्ष की एक समान व स्थायी विचारधारा नहीं है। संगठनात्मक रूप से कमजोर विपक्ष लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। विपक्ष को भी अपनी भुमिका में सुधार करने की आवश्यकता है। सतापक्ष और विपक्ष कमजोर, दलीत युवा, बेरोजगार, असहाय पिछड़ों की आवाज सुनेंगें तभी बाबा साहेब अम्बेडकर के राष्ट्र निर्माण के सपनों को पूरा किया जा सकता है।

****